भक्तिकालीन कवि तुलसी कृत 'रामचरितमानस' में सामाजिक सरोकार

डॉ0 युवराज सिंह
हिन्दी विभाग
आर0बी0एस0 कॉलेज, आगरा।

भक्तिकाल हिन्दी साहित्य के इतिहास में स्वर्णकाल के नाम से जाना जाता है। भक्तिकालीन हिन्दी कवियों की जब बात की जाती है तो तुलसी हिन्दी साहित्याका"ा में जगमगाते हुए नक्षत्र के समान दिखाई देते हैं।

भक्तिकालीन हिन्दी साहित्य केवल भजन कीर्तन का गायन नहीं करता, इस काल के साहित्य में सामाजिक जीवन के उच्चाद"ार्ा दृष्टिगत होते हैं।

तुलसी जिस युग में जन्मे वह घोर अफरा–तफरी का युग था। इस युग में सामाजिक विषमता अपने चरमोत्तकर्ष पर थी। अंधवि"वास, जाति–पाति, छूआ–छूत, जादू–टोने, टोटके, अ"ाक्षा, गरीबी जैसे महाराक्षस ताण्डव नृत्य कर रहे थे। लोभ–लालच, मोह–माया के व"ाीभूत समाज त्राहि–त्राहि कर रहा था। समाज में एकता का अभाव था। विभिन्न प्रचलित अ"ाांति के साथ सामाजिक अ"ाांति भी जोर पकड़ रही थी। ऐसी परिस्थितियों में तत्कालीन संत कवियों ने दे"ा में भावात्मक एकता स्थापित करने का सफल प्रयत्न किया। समाज को सु"िक्षित एवं संस्कारित करने के लिए संत कवियों ने भक्ति का सहारा लिया।

तुलसीदास ऐसे विरले संत कवि हैं, जिन्होंने अपने सामाजिक जीवन–द"ार्न के माध्यम से बिखरे हुए समाज को एकता के सूत्र में पिरोने का कार्य किया। टूटे हुए एवं निरा"ाा के अंधकार में डूबे हुए समाज को तुलसी ने अपनी रचनाओं के माध्यम से अक्षय संबल प्रदान किया। आचार्य रामचंद्र शुक्ल के अनुसार– ''भारतीय जनता का प्रतिनिधि कवि यदि किसी को यह कह सकते हैं तो इन्हीं महानुभाव को।[1]

तुलसीदास सच्चे अर्थों में भारतीय जन मानस की भाव–भूमि के कवि थे। भारतीय जनता से जो स्वाभाविक लगाव एवं जुड़ाव तुलसी साहित्य में देखने को मिलता है वह अद्वितीय है।

सामाजिक सरोकार की जब बात करते हैं तो ज्ञात होता है कि समाज की परे"ाानियों से परे"ाान होना या चिंतित होना, समाज से गहरा लगाव रखना, जनसाधारण के हृदय में पैठ बनाना, उनकी समस्याओं से रूबरू होना और उनके समाधान प्रस्तुत करना। इस दृष्टि से तुलसी कृत 'रामचरितमानस' पर दृष्टिपात किया जाय तो यह रचना सामाजिक सरोकार से ओत–प्रोत प्रतीत होती है।

तुलसीदास इस रचना के माध्यम से जनसामान्य को राम के चरित्र रूपी सरोवर में डुबकी लगवाते हैं, पाठक और श्रोता को गंगा स्नान का अहसास होने लगता है उसके सारे पाप कर्म उस सरोवर में डुबकी लगाके धुल जाते हैं वह स्वच्छ, निर्मल एवं पवित्र हो जाता है।

इसीलिए रामचरितमानस को जीवन की पाठ"ाला कहा जाता है,

यथा–

''रामचरितमानस'' में तुलसी केवल कविरूप में ही नहीं उपदे"ाक के रूप में भी सामने आते है''[1]

इसी प्रकार–''तुलसी का मूल संदे"ा यही है कि मनुष्य बड़ा होता है अपनी मनुष्यता से ना कि जाति और पद से।''[3]

रामचरितमानस के नायक राम को तुलसीदास ने इस कसौटी पर खरा पाया है। आपने मर्यादापुरूषोत्तम राम के चरित्र के माध्यम से भारतीय समाज के समक्ष एक उच्चाद"ार्ा चरित्र को चित्रित करने का सफल प्रयास किया है। रामचरितमानस का एक–एक पात्र (चरित्र) एक सुख–"ाांति सम्पन्न समाज की नींव रखने का सफल प्रयास करता है। प्रेम एवं भाईचारे की भावना ही समाज को सुख–समृद्धि प्रदान करती है। तुलसी में समन्वय एवं समाहार की अपार शक्ति विद्यमान थी इसी कारण सूक्ष्म से सूक्ष्म विषय भी उनकी दृष्टि से अछूता नहीं रहा है।

यथा–

''गोस्वामी जी की भक्ति पद्धति की सबसे बड़ी वि"ोषता है उसकी सर्वांगपूर्णता। जीवन के किसी पक्ष को सर्वथा छोड़कर वही नहीं चलती है। सब पक्षों के साथ उसका समांजस्य है।''[4]

रामचरितमानस में अधिकतर ऐसे प्रसंगों का वर्णन मिलता है जो मनुष्यमात्र के हृदय का स्प"ार्ा करने वाले हैं। वह रचनाकार अपने उद्दे"य में सफल होता है जिसकी रचना समाज को आत्मचिंतन के लिए विव"ा करती हो।

''राम के प्रमाणिक चरित्र द्वारा वे जीवन भर बना रहने वाला प्रभाव उत्पन्न करना चाहते थे।''[5]

आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने लिखा है– ''मानव जीवन की कितनी अधिक द"ाओं का सन्निवे"ा उनकी कविता के भीतर है। इस सम्बन्ध में हम यह पहले ही कह देना चाहते हैं कि अपने दृष्टि विस्तार के कारण ही तुलसीदास जी उत्तरी भारत की समग्र जनता के हृदय मंदिर में प्रेमपूर्ण प्रतिष्ठा के साथ विराजमान रहे हैं।''[6]

तुलसी ने संयुक्त परिवार के सांस्कृतिक वैभव को 'मानस' के विभिनन चरित्रों के माध्यम से उद्घाटित किया है। भारतीय संस्कृति में संयुक्त परिवार प्रथा का एक वि"ोष महत्व रहा है। जिस परिवार में माता–पिता, पति–पत्नी, भाई–बन्धु, सास–बहू, पुत्र–पौत्र आदि रहते हैं, वह आद"ार्ा संयुक्त परिवार की प्रथा लगभग समाप्ति की ओर है। इस पारिवारिक विघटन ने तमाम सामाजिक समस्याओं को जन्म दिया है। 'रामचरितमानस' का कथानक प्राचीन भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति के अनुरूप पात्रों का चरित्रांकन करने में पूर्णरूपेण सफल रहा है। कपितय यात्रों को छोड़कर 'मानस' के सारेपात्र को त्याग, प्रेम एवं बंधुत्व की डोर से बाँधने वाले हैं। पारिवारिक संबंधों को जिस ढ़ंग से 'तुलसी' ने परिभाषित किया है वह अन्यत्र दुर्लभ है। पारिवारिक सम्बन्धों के आद"ार्ा की एक झलक दृष्टव्य है।

यथा–

<u>पिता–पुत्र का आद"ार्ा–</u>

रामचरितमानस में जब हम पिता–पुत्र के आद"ार्ा को देखते हैं तो पता चलता है कि महाराज द"ारथ एक आद"ार्ा पिता हैं और राम उनके आद"ार्ा पुत्र हैं। पिता के एक आदे"ा पर चौदह वर्ष का वनवास स्वीकार कर राम भारतीय संस्कृति की मर्यादा की रक्षा करते हैं। पिता–पुत्र के प्रेम

की पराकाष्ठा तो तब देखने को मिलती है जब वचन की रक्षा एवं मर्यादा पालन हेतु द"ारथ जी पुत्र वियोग में अपने प्राण त्याग देते हैं।

''राम–राम कहि राम कहि, राम राम कहि राम।
तनु परिहर रघुवर बिरहँ, राउ गयउ सुरधाम।।[7]

पति–पत्नी के आद"ार्–

भारतीय संस्कृति के अनुकूल सीता अपने पत्नी धर्म का पालन सहर्ष अनेक कष्ट उठाकर करती हैं। हर सुख–दुख में वह अपने पति का साथ देती है। सीता के चरित्र में पतिव्रता नारी का आद"ार्श देखने को मिलता है।

सास–बहू का आद"ार्–

सास एवं बहू के रूप में कौ"ाल्या एवं सीता का चरित्र राम के साथ बन जाने हेतु वह अपनी सास कौ"ाल्या से विनम्र निवेदन करती हैं, उस समय अपनी बहू सीता के प्रति सास के भाव सास–बहू के आद"ार्श संबंधों की व्याख्या स्वतः ही कर देते हैं।

पलंग पीठ तजि गोद हिंडोरा।
सिय न दीन्ह पग अवनि कठोरा।।
जिबन मूरि जिमि जोगवत रह हूँ।
दीप बाति नहिं टारन कहेऊँ।।[8]

सास से विदा लेते समय का दृष्य दृष्टव्य है–

तब जानकी सासु पगु लागी।
सुनउ मात मैं परम आभागी।।[9]

श्वसुर बहू का आद"ार्–

महाराज द"ारथ का अपनी बहू सीता के प्रति अपार प्रेम था। श्वसुर–बहू के प्रेम में पिता–पुत्री का प्रेम झलकने लगता है। सुकुमारी कोमलांगी सीता के वन जाने से द"ारथ दुःखी हो जाते हैं। सुमंत से कहते हैं– राम–लक्ष्मण न लौटें तो सीता का अव"य लौटा लाना। सीता उन्हें जीवन का एकमात्र आधार जान पड़ती है–

जो नहिं फिरहिं धीर दोउ भाई।
सत्यसंध दृढ़ व्रत रघुराई।
तौ तुम्ह विनय करेहुं कर जोरी।
फेरिअ प्रभु मिथिले"ा किसोरी।।[10]

भाई–भाई का आद"ार्–

लक्ष्मण राम के अनन्य भक्त हैं। राम के साथ चौदह वर्ष तक वनवास में साथ निभाना उनके प्रेम और त्याग की मिसाल है।

राम और लक्ष्मण ही नहीं भरत का राम के प्रति निस्वार्थ प्रेम भरत के चरित्र को अद्वितीय बना देता है।

भरत का नि"छल प्रेम वनवासी राम को अयोध्या वापस लाने के लिए विव"ा करता है। असफल होने पर वे राम की चरण पादुका लाकर चौदह वर्ष तक राज सिंहासन से विरत रह कर त्याग एवं समर्पण की एक मिसाल पे"ा करते है।

स्वामी–सेवक का आद"ार्–

राम भक्त हनुमान सेवा भाव स्वामी–सेवक के संबंधों की नई परिभाषा गढ़ने में सफल रहा है। हनुमान जैसी स्वामि भक्ति दुर्लभ है। राम के संकट मोचन हनुमान हर परिस्थिति में राम की सहायता हेतु तत्पर रहते हैं।

मित्र–मित्र का आद"ार्–

राम और सुग्रीव की मित्रता यह सिद्ध कर देती है कि मित्रता से बड़ा दुनिया में कोई रि"ता नहीं है। सुग्रीव राम–रावण युद्ध में अपने मित्र धर्म का पालन करते हैं तो राम सुग्रीव की सहायता कर अपने मित्र धर्म का निर्वाह करते हैं।

रामचरितमानस में तुलसी द्वारा सामाजिक संबंधों की जो व्याख्या की गई है वह एक आद"ार् समाज के निर्माण हेतु अति आव"यक है। यही उनका सामाजिक सरोकार है।

तुलसी का सामाजिक सरोकार केवल मनुष्य जाति तक ही सीमित नहीं है। आप की सहृदयता एवं संवेदन"ाीलता पेड़–पौधे, वन, नदी, झरना, पर्वत, प"ाु, पक्षी, वानर आदि का भी सघन स्प"ार् करती है।

सीता हरण के बाद विरह व्यथित राम लताओं से, पक्षियों से, प"ाुओं से सीता के बारे में पूछते हैं।

हे खग मृग हे मधुकर श्रेनी।[11]
तुम्ह देखी सीता मृगनैनी।।

गिद्धराज जटायु ने सीता की दृःखभरी वाणी सुनकर पहचान लिया कि ये श्री रामचन्द्र की पत्नी हैं। उसने रावण से सीता को बचाने की हर संभव कोि"ा"ा की जिसमें उसे प्राणों को गवाना पड़ा।

सीते पुत्री करसि जनि त्रासा।[12]
करिहउँ जातुधान कर नासा।।

तुलसी समता मूलक समाज के संवाहक है। ऊँच–नीच एवं जाति–पाति के भेद ने समाज में हमे"ाा वैमनस्यता पैदा की है। तुलसी जैसा क्रांतिकारी युग सृष्टा ही समाज के सबसे निचले पायदान पर खड़े दलित वर्ग को राम के समकक्ष लाकर खड़ा करते हैं। केबट, निषाद, शबरी रामचरितमानस के ऐसे ही पात्र हैं।

इस प्रकार तुलसी का सामाजिक दृष्टिकोंण इतना व्यापक है, उन्होंने सम्पूर्ण प्रकृति में समरसता एवं आनंद की खोज की है। रामचरित के संपूर्ण घटना, प्रसंग समाज के प्रति उनके स्वाभाविक लगाव को द"ार्ाते हैं। उन्हें समाज के हर वर्ग की चिंता सताती है। संस्कार एवं चरित्रवान समाज की सुख एवं समृद्धि की अनुभूति कर सकता है।

जन–जन के प्रति सहृदयता एवं संवेदन"ाीलता ही हमारे अर्न्तमन में सामाजिक सरोकार के भाव जाग्रत करती है।

तुलसीदास एक आद"ार्ा भक्त, लोकनायक, धर्म प्रचारक एवं सच्चे समाज सुधारक थे। आपकी रचना रामचरितमानस कोटि–कोटि मानसों को सुख–"ाांति प्रदान करता है। रामचरितमानस की एक–एक चौपाई, दोहा भारतीय संस्कृति का कण्ठाहार हैं।

रामचरितमानस में राम के बनंगमन से लेकर रावण वध तक की मुख्य कथा के बीच–बीच में जो चरित्र एवं प्रसंग उद्दघटित हुए हैं वह भारतीय समाज को एक उच्चाद"ार्ा प्रदान ही नहीं करते वरन संपूर्ण भारतीय समाज को एकता के सूत्र में पिरोने वाले भी है। इसमें असत्य पर सत्य की विजय, अन्याय पर न्याय की विजय द"ार्नीय है।

रामचरितमानस एक ऐसा उपवन है जिसमें सत्य, न्याय, चरित्र, नैतिकता, मर्यादा, प्रेम, त्याग, समर्पण एवं आद"ार्ा रूपी वटवृक्ष है। इनकी जड़े इतनी गहरी हैं कि ये चिरकाल तक सामाजिक सरोकार के ताने–बाने को छिन्न–भिन्न नहीं होने देगी।

निःसदेह तुलसीकृत रामचरितमानस सामाजिक सरोकार से ओत–प्रोत रचना है।

संदर्भ सूची–

1. भक्तिकालीन काव्य–डॉ0 रामविलास गुप्त–पृ0 162 कमल प्रका"ान।
2. हिन्दी साहित्य का इतिहास–आचार्य रामचंद्र शुक्ल–पृ0 84
3. भक्तिकालीन काव्य–डॉ0 राम विलास गुप्त–पृ0 162
4. हिन्दी साहित्य का इतिहास–आचार्य रामचंद्र शुक्ल–पृ0 82
5. हिन्दी साहित्य का इतिहास–आचार्य रामचंद्र शुक्ल–पृ0 84
6. अयोध्याकाण्ड एक समीक्षा–बैंकटे"ा नारायण श्री वास्तव–पृ0 17
7. रामचरितमानस (अयोध्याकाण्ड)–पृ0 457
8. अध्योध्याकाण्ड–एक समीक्षा–पृ0 42
9. अध्योध्याकाण्ड–एक समीक्षा–पृ0 42
10. अध्योध्याकाण्ड–एक समीक्षा–पृ0 43
11. रामचरितमानस (अध्योध्याकाण्ड)–पृ0 576
12. रामचरितमानस (अध्योध्याकाण्ड)–पृ0 565